अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

डॉक्टर क्षमा शर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

वनिता . एम
रजिस्टर नंबर: DR-PHD/17/17
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान धरवाड़ 58001

डॉ. अमर ज्योति
एम .ए ,एम.फिल पीएच.डी.
विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर केंद्र उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा धरवाड़ 58001

1. प्रस्तावना:

व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संबंध अन्योन्याश्रित है । चाहे प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब उनके कृतित्व में निहित होती ही है । व्यक्तित्व में साहित्यकार की संवेदना ओं के साथ जन्म परिवार परिवेश परिवेश गत उनके अनुभव एवं प्रभाव, प्रभाव वक्त विशेषताएं समाहित होती है। साहित्यकार का व्यक्तित्व उसके समग्र कृतित्व के साथ जुड़ा हुआ रहता है। उनके उचित मूल्यांकन करने के लिए उनके व्यक्तित्व का परिचय होना आवश्यक है जिससे हम उनकी मनोवैज्ञानिक कथा एवं उनके दृष्टिकोण के आधार पर उनके समग्र साहित्य से परिचित होकर उनकी विशेषता क्या है उनके परिप्रेक्ष्य क्या है यह सब हम जान सकते हैं ।

1.1 जन्म:

हिंदी के कथाकार क्षमा शर्मा का जन्म 30 अक्टूबर 1955 को आगरा में ब्राम्हण परिवार में हुआ था इनका जन्म सतमासी हुआ था । जन्म से ही वह मृतवत बालक के समान थी। डॉक्टर शर्मा शर्मा के पिताजी श्री राम स्नेही शर्माते और माता श्रीमती कईलादेवी शर्मा रही है । उनके पिताजी रेलवे में कार्यरत रहे थे। इसलिए क्षमा जी का बचपन अलग-अलग स्थानों एवं स्थितियों में बदलता रहा था। इसके अलावा इनके तीन भाई और दो बहने हैं अपने परिवार में क्षमाजी सबसे छोटी थी ।

1.2 परिवार:

डॉ श्यामा शर्मा के पिताजी श्री राम स्नेही शर्मा बहुत सख्त स्वभाव की थी। उनकी माताजी मन से भावुक एवं विचारों से दृढ़ रही है। उनके पिता को नृत्य संगीत तथा लड़कियों का सजना सवरना कतई पसंद नहीं था। परंतु समय के साथ इनके स्वभाव में भी परिवर्तन हुआ और क्षमा जी को भाषण कैसे दिया जाता है? इसकी दीक्षा भी दी। इनके परिवार में सबसे बड़े भाई खुले दिमाग वाले थे। बुद्धिमान एवं व्यवहार कुशल भी रहे हैं। बड़े भाई की पहली नौकरी और पहली तनख्वाह से क्षमाजी को फ्रॉक एवं बिस्कुट के साथ प्लास्टिक का मोर मिलाता वही उनके बचपन के आनंद एवं खुशी के क्षण रहे थे। मंजिलें भाई युद्ध प्रिय थे। उन्हें पहलवान का शौक रहा था। स्वभाव में झगड़ालू

थी। जिसके परिणाम परिवार की बहनों को भुगतने पड़े थे। समाज में उन्हें अपमानित होना पड़ा था और इसका सबसे अधिक प्रभाव क्षमाजी पर पड़ा था उनके छोटे भाई का कोई रोजगार नहीं था ।

1.3 पारिवारिक जीवन:

क्षमा जी का पालन पोषण संयुक्त परिवार में हुआ था। इन का बचपन सामान्य नहीं था। क्षमाजी स्वयं कहती है "बचपन की कोई स्मृति तो ऐसी नहीं जो बहुत उल्लास और आनंद से भरी हो"1। क्षम1जी का पारिवारिक जीवन बेहद दुख से भरा रहा । जीवन में अनेक कटु अनुभवों का सामना किया। परिवार में बहुत सी बातें ऐसी थी जिन्हें देखकर क्षमा जी का मन दुख से भर जाता था । जिस परिवार में लड़की का जन्म होता है वही उसके साथ अन्याय होता है उन्हें सहा भी और देखा भी। घर में उन्हें कभी मनपसंद भोजन नहीं मिल पाया है पर घर में तो पुरुषों के मनपसंद का भोजन पकाया जाता था। इनके परिवार में स्त्रियों को दुय्यम दर्जे का समझा जाता था I

पिताजी के बीमारी के दौरान क्षमा जी को अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा था। घर में अत्यंत गरीबी रही थी। रिश्तेदारों में भी ऐसे समय काम नहीं आए ,इस बात का भी अनुभव हुआ था। परिवार में गरीबी इस हद तक हो चुकी थी कि घर में अनाज तक नहीं होता था। क्षमाजी कहती है 1 "एक दिन घर में खाने को कुछ नहीं था पड़ोसी ने गाय को खिलाने के लिए कीड़े पड़ा बेसन दे गई थी। मां ने उसे थोड़ा साफ किया और मिले आटे से पिताजी को भोजन बनाया "2। उनके पिता के मृत्यु के बाद उनकी घर की स्थिति और भी बिगड़ गई । बहुत आर्थिक संकट से उन्हें गुजारना पड़ा । क्षमा जी को आज भी इस बात का दुख है कि उनके पिता के अंतिम दिन बहुत ही कठिनाई और दुख से भरे बीते

उन्हें बचपन में ही पुरुष प्रधान समाज की बर्बरता का अनुभव हुआ था। क्षमाजी दुनियादारी की सच्चाई को बचपन से ही जान गई थी कि कमजोर व्यक्ति के आंसुओं की कोई कीमत नहीं होती। इसी सच्चाई के साथ अपने आप को समझ रही थी। निरंतर संघर्ष करने के कारण वह अपने आप को लड़कों के समान समझती थी। परंतु समाज में यह स्वीकार नहीं था । उसी समय से क्षमा जी का समाज के प्रति सच्चाई एवं स्त्री के प्रति हक और अधिकार के बारे में सोच विचार करना शुरू किया ।

1.4 शिक्षा:

क्षमाजी के शिक्षण के बारे में कहना है तो यह कह सकते हैं कि इनकी पिता रेलवे में नौकरी करने के कारण से क्षमा जी बहुत जगह रह चुके और वही शिक्षा प्राप्त की । प्रारंभिक शिक्षा कन्नौज में हुई। छठी से आठवीं कक्षा तक 2 वर्ष आगरा में पड़ी। आठवीं से 12वीं कक्षा तक इनकी पढ़ाई हाथरस में हुई थी। 12वीं कक्षा के इम्तिहान के बाद बीमार पिता की मृत्यु हो गई थी। बाद में वे अपने बड़े भाई जो दिल्ली में रहते थे वहां रहकर बीए की पढ़ाई 'देशबंधु' कॉलेज से पूरा किया। और PHD की पढ़ाई क्षमा जी ने शादी के बाद पूर्ण की। अपने बड़े भाई के प्रति क्षमा जीब हुत श्रद्धा वान है। क्योंकि उन्हीं की वजह से अपनी पढ़ाई पूर्ण कर पाई। उनके बड़े भाई अपने परेशानियों के बावजूद क्षमाजी को पढ़ाया।3 क्षमा जी दसवीं तक आते-आते शरद चंद्र, प्रेमचंद्र,

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

दिनाकर, जयशंकर प्रसाद, सुभद्रा कुमारी ,चौहान महादेवी वर्मा आदि साहित्यकारों की रचनाओं को अपने बड़े भाई के कारण पढ़ पाई थी । इस तरह क्षमा जी जीवन की विषमताओं, गरीबी के साथ-साथ अपनी परिस्थितियों से समझौता करके संघर्ष के साथ अपने जीवन के संघर्ष से बलवती होती जाती है और उन्हीं संघर्षों की वजह से वह जीवन में साहित्य की रचना का प्रेरणा प्राप्त की ।

1.5 साहित्य सृजन एवं व्यवसाय:

क्षमा जी की अध्यापिका राजकुमारी प्रसाद रेडियो नाटकों की कलाकार थी और एक दिन वह क्षमा जी को रेडियो में काम करने का मौका दिया ।तब वह स्नातक के प्रथम वर्ष में थी । एक प्रोग्राम के लिए उन्हें ₹15 मिलते थे । सन 1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया जिसे अखबार में पढ़ कर एक हस्तलिखित लेख 'अमर उजाला 'में क्षमा जी ने भेजा ।आश्चर्य हुआ कि वह लेख छप गया था ।रेडियो प्रोग्राम और अखबार में लेख छपने से क्षमा जी की आत्मविश्वास बढ़ने लगी । मित्रों के कहने पर 'वॉइस ऑफ अमेरिका' के कार्यक्रमों का हिंदी में अनुवाद किया जिससे उन्हें पैसा मिला ।क्षमा जी को उस वक्त पैसों की सख्त जरूरत रही थी।

एक बार एक सफर में शुभावर्मा से मुलाकात हुई जो 'साप्ताहिक हिंदुस्तान 'में कार्यरत थी। उन्होंने क्षमाजी को बच्चों के लिए कहानी लिखने को कहा। लिखने का इतना अनुभव नहीं था फिर भी क्षमा जी अपनी जरूरतों के कारण लिखना शुरू किया । इस तरह उनकी लेखन कार्य शुरू हुआ ।इन से प्रभावित' दैनिक हिंदुस्तान ' के रीतीश विद्यालंकार और विद्यासागर विशिष्ट ने उन्हें बुलाकर पुस्तक समीक्षा करने को कहा तो क्षमाजी लिखती रही और उन्होंने केवल लिखने को ही नहीं कहा , उसकी त्रुटियों को भी निकाली। क्षमाजी लेखन कार्य सीखते रहे। हिंदुस्तान पत्रिका में भी लिखती रही। इस प्रकार क्षमाजी ने अपने आपको लेखन में व्यस्त कर लिया था ।

श्यामा जी नई दिशा की कोशिश में लगी रही साथ में अपना काम भी करती रही। दैनिक हिंदुस्तान, साप्ताहिक आकाशवाणी और हिंदुस्तान आदि समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के लिए भी लिखती रही। ' अणिमा' पत्रिका के लिए प्रेम कथा लिख दी और वह छप गई। नवभारत टाइम्स में भी लिखती है। उनका लिखा हुआ उनके बड़े भाई पढ़ते और कमियों को ठीक कर देते थे। इसके बीच उनके ' एम ए 'का परिणाम आया,जिनमें उन्हें केवल 58% अंक आए थे तो बड़े भाई दुखी हुए और उन्होंने क्षमा जी को लिखने के लिए मना कर दिया। क्षमा जी मानी नहीं लिखती रही पढ़ाई भी करती रही क्योंकि लिखना बंद करने से आय का साधन ही नहीं रहेगा।

श्यामा जी नई दिशा की कोशिश में लगी रही साथ में अपना काम भी करती रही। दैनिक हिंदुस्तान, साप्ताहिक आकाशवाणी और हिंदुस्तान आदि समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के लिए भी लिखती रही। ' अणिमा' पत्रिका के लिए प्रेम कथा लिख दी और वह छप गई। नवभारत टाइम्स में भी लिखती है। उनका लिखा हुआ उनके बड़े भाई पढ़ते और कमियों को ठीक कर देते थे। इसके बीच उनके ' एम ए 'का परिणाम आया,जिनमें उन्हें केवल 58% अंक आए थे तो बड़े भाई दुखी हुए और उन्होंने क्षमा जी को लिखने के लिए मना कर दिया। क्षमा जी मानी नहीं लिखती रही पढ़ाई भी करती रही क्योंकि लिखना बंद करने से आय का साधन ही नहीं रहेगा।

नवंबर 1976 में प्रशिक्षु उप संपादक की मांग की एक विज्ञापन आती है और शुभाधी उन्हें उसे अप्लाई करने को कहती है क्षमा जी पत्रकारिता नहीं जानती थी, पर एक नौकरी की तलाश थी। उसके बाद एक लिखित परीक्षा के बाद उन्हें 30 जनवरी 1977 को हिंदुस्तान टाइम्स से ताल मिला । उसमें लिखा था आप आकर साक्षात्कार दे । साक्षात्कार के दौरान वह कहती है कि पिताजी नहीं है ,भाइयों पर बोझ बनना नहीं चाहती इसीलिए वह काम करने आई है ,काम करना चाहती है । बस साक्षात्कार हो गया। उसके बाद वह भूल गई थी काम उसको मिलेगा बाद में 31 जनवरी 1977 के एक शाम शुभाजी इनके घर आते हैं और उन्हें काम मिलने की खुशखबरी देते हैं। उनकी खुशी का कोई अंदाजा नहीं। शुभाजी के कहने पर वे अगले ही दिन ऑफिस जाकर नियुक्ति पत्र पर हस्ताक्षर किए। क्षमा जी की यह पहली नौकरी थी जिस पद पर आज तक कार्यरत है ।

क्षमाजी मेहनती तो थी पर जीवन मानसिक रूप से शांत था। क्षमाजी कहती है कि "इस तरह मेरी नौकरी की शुरुआत हुई। लोग कहते हैं मैं नंदन में ट्रेनी आई थी, सहायक संपादक बन गई।"4 इस प्रकार क्षमाजी सहायक संपादक बनी रही, और तुरंत बाद में इनके विवाह की बात सामने आई। इस प्रकार क्रमशः क्षमाजी के जीवन की विकास यात्रा आगे बढ़ती चली गई।

1.6 विवाह:

समाज के विवाह की कहानी भी दिलचस्प रही है। विवाह संबंधित क्षमा जी के कटु अनुभव और बहन की शादी के दुखद अनुभव से उनका मन रिक्त हो गया था । विवाह में दहेज लेन दे ना होने बिल्कुल पसंद नहीं था। इसीलिए विवाह से इनकार करती रही थी। एक दिन अचानक बड़े भाई के मित्र सुधीश पचौरी क्षमा जी की मुलाकात हुई और उनके द्वारा क्षमा जी के लिए शादी का प्रस्ताव आया। क्षमा कि जैसे व्यक्ति जीवनसाथी के रूप में चाहती थी बिल्कुल वैसे ही बल्कि उससे कहीं अधिक अच्छे रहे हैं सुधीशजी । क्षमाजी कहती है-" कोई दहेज नहीं ,कोई लेन-देन नहीं ,कर्मकांड नहीं ,विवाह भी कोर्ट में और हम दोनों जीवन भर बहुत अच्छे मित्र की तरह रहेंगे ऐसा वादा था उनका" 5। सुधीर जी बहुत क्रोधि थे,उनके स्वभाव से परिचित उनके भाई भी इस विवाह के लिए इंकार किया पर क्षमा जी मान गए और 17 अगस्त 1977 को अदालत में उनका विवाह संपन्न हुआ । बिना लेनदेन का यह अनोखा विवाह था। क्षमाजी ने अपने घर से एक साड़ी तक नहीं ली और ना ही सुधीर जी ने शादी की खुशी में छोटे भाई से लाई मिठाई ग्रहण की। क्षमाजी का विवाह सहज और अत्यंत साधारण ढंग से संपन्न हुआ था।

1.7 वैवाहिक जीवन:

क्षमा जी का वैवाहिक जीवन सामान्य रहा । उनके पति कॉलेज में पढ़ाते थे। पढ़ाई में रुचि रखने वाले सुधीर जी क्षमा जी को भी पढ़ने लिखने में प्रेरित करते रहते थे।यहां तक कि जब क्षमा जी पढ़ने लिखने बैठती तो वे खुद खाना बनाकर जिम्मेदारियों को बांट लेते थे। उनकी पढ़ाई पूरी करने का आग्रह भी उन्होंने ही किया।

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

क्षमाजीकी प्रथम संतान के रूप में उनके बेटे का जन्म अप्रैल 1979 में हुआ तथा दूसरी संतान ,उनकी उनकी बेटी 1984 में हुई थी ।बच्चों के लालन पोषण का अधिकांश भाग उनके पति सुधीर जी ने ही उठाया था क्षमाजी कहती है कि हसुधीर जी का मानना है कि पत्नी कभी छोटी नहीं होती। उसे भी अभिव्यक्ति का अधिकार है। क्षमाजी ही मानती है कि उन्हीं के अच्छे व्यवहार की बदौलत और प्रेरणा से पुस्तके लिख पाई। क्षमाजी का कहना है कि "मेरी असली जीवन तो विवाह के बाद शुरू हुआ था "6इसी वाक्य से क्षमा जी के वैवाहिक जीवन के प्रति सत्यता एवं मानसिक तथा स्पष्ट होती है। अपने पति के अमूल्य सहयोग से आगे बढ़ती जा रही थी। सुधीशजी ने क्षमा जी को पत्रकारिता में डिप्लोमा कराया और उन्हीं की प्रेरणा से 1997 में क्षमाजी अपना शोध कार्य पूर्ण किया।

1.8 स्वभाव एवं अभिरुचि:

डॉ क्षमा शर्मा का स्वभाव अत्यंत सीधा सरल रहा है क्षमा जी की दृष्टि अत्यंत सूक्ष्म रही । वे नारियों के ऊपर पैनी दृष्टि डालकर उसकी हर एक समस्याओं के बारे में अपनी लेखनी डाली है ।उनके स्वभाव में भावों के साथ विचारों की भी दृढ़ता दिखाई देती है। क्षमा जी की अभिरुचि है नारी की विभिन्न स्थितियां, पर्यावरण, और देश के भावी भविष्य सृष्टि कर्ता बच्चों के बारे में अपनी लेख, अपनी कथा साहित्य काकेंद्र बनाया है ।

1.9 व्यक्तित्व:

डॉ श्यामा शर्मा का व्यक्तित्व बहुआयामी एवं आकर्षित है । रंग सांवला है पर रूप मनोहर ही है। संगठित शरीर और उसमें बड़ी बड़ी आंखें इनके व्यक्तित्व को और भी प्रभावी एवं आकर्षित बनाती है। उनके भाल पर बड़ी बिंदी चेहरे की प्रसन्नता में वृद्धि करती है। वे मृदुभाषी है। हमेशा मीठी मधुर भाषा से सबके साथ पेश आती है। मृदुभाषी के साथ मितभाषी है, व्यवहार कुशल भी है। अंतर मुख होते हुए भी हमेशा काम में व्यस्त रहती है। उनका जीवन संघर्षशील व्यक्तित्व का सूक्ष्म रहा है । पत्रकारिता के व्यवसाय से जुड़ी ,देश विदेश की यात्राएं करने वाली, महिला संगठनों के साथ ट्रेड यूनियन ,पत्रकारों की यूनियन, पर्यावरण ,फिल्मों ,दूरदर्शन, आकाशवाणी में रहकर समाज की अन्य संस्थाओं से संपृक्त होते हुए बाल साहित्य सृजन एवं नारी लेखन के कारण उनका व्यक्तित्व 'डाइनेमिक' स्त्री के रूप में उभरता है ।प्रेम उनके व्यक्तित्व का अभिन्न पहलू है। स्वाभिमानी होते हुए आत्मनिर्भरता उनकी विशेषता रही है । क्षमाजी संवेदनशील भावुक कोमल स्वभाव वाली महिला है पर सामाजिक एवं पारंपरिक मूल्यों के आधार तो उनको सहते कठोर, गंभीर स्वयं निर्णय लेकर, जीवन की सुंदरता को सजाकर साकार करने वाला उनका अपना निराला ही व्यक्तित्व रहा है ।

क्षमा जी को बच्चों के प्रति काफी प्रेम और लगाव है। क्षमा जी को फूलों से बहुत प्यार है ।जब वह स्विजरलैंड गई थी वहां की नजारा देखकर वह यहां लिखती है लिखती है कि यहां के घरों की बालकानियों, यहां कि पेड़ों के तनों में भी फूल ही फूल उगे हैं ।यहां के लोगों को हर जगह फूल उगाने, ... का बहुत शौक है 7।

1.10 डॉ क्षमाशर्मा का जीवन के प्रति दृष्टिकोण:

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

क्षमा जी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण उदार, बहुमुखी और व्यापक रहा है। क्षमाजी समाज के प्रतिभा संपन्न साहित्यकारों में अपने आप को बहुत छोटी मानते हुए उनके प्रति श्रद्धा भाव भी रखती है । वामपंथी विचारों से प्रभावित होने से उनका मानना है कि हर व्यक्ति को जीवन आवश्यक चीजों की सुविधाएं मिलनी ही चाहिए। सबको जीवन जीने का अधिकार है। क्षमाजी नारीवाद से प्रभावित रही है। स्त्रियों की शिक्षा को अत्यधिक महत्व देती है। उनकी दृष्टि से शिक्षा के अवसर एवं उसके प्रति जागृति से ही लड़की का भविष्य निर्धारित होता है। छोटे शहरों की लड़कियां सामाजिक संस्कारों के कारण वश दब्बू होती है। उनका कहना है कि गांव और शहर वादी विमर्श के लिए स्वर्ग की आखिरी सीडी क्यों ना हो लड़कियों के लिए इतना गहरा कुआं है जिससे वह मुश्किल से निकल पाती है ।परंपरा ,संस्कृति ,मर्यादा आदि के नाम पर बार बार इन्हें इस अंधे कुएं में धकेल जाता है ।8 छोटे शहरों में लड़कियों को शिक्षा का मौका नहीं मिला। वह उन्हें मिलना चाहिए दूसरी ओर क्षमा जी की दृष्टि से सत्य है कि आज कस्बे कस्बे के उच्च शिक्षा प्राप्त लड़कियां घर में बैठी है उनके पास करने के लिए कुछ नहीं है सिवाय विवाह के इंतजार के।9

क्षमा जी आत्मा विश्वास भरी लड़कियों और उनके पहनावे के बदलाव को देखते हुए बहुत खुश होती है। उनका मानना है कि, "लड़कियों को भाषा मिलना उनका आत्मनिर्भर होना रूढ़ियों से परे निकलकर आत्मविश्वास से भरे कपड़े पहनना यही उनकी मुक्ति का पहला कदम है।"10 श्यामा जी के जीवन दृष्टि मिस्त्री के प्रति विचार है कि," मैं सामाजिक तौर पर एक मजबूत स्त्री को देखना चाहती हूं जिससे कोई यह कहने की हिम्मत ना कर सके, औरत हो औरत की तरह रहा करो1 जहां स्त्री का जन्म लेना ही उनका अपराध ना हो जाए।"11

1.11 साहित्य सृजन की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन:

डॉ क्षमा शर्मा का नारी - विमर्शकार का व्यक्तित्व निरंतर विकसित होने में उनके स्वभाव व उनके स्वानु भावों की विचार अभिव्यक्ति ही सहायक हुआ है।उनके प्रेरक व्यक्तित्व में क्षमाजी के बड़े भाई एवं पति सुधीर जी का अधिक योगदान रहा है।बचपन में बड़े भाई द्वारा दिए गए शिक्षा संस्कार पढ़ाई गई साहित्य एवं साहित्यकारों की रचना सहायक बने। क्षमा जी भले ही भावुक हो पर उनकी कहानियों में वास्तविकता का पुट रहा है।उनकी प्रखर नारी चेतना तथा नारी के प्रति उनकी प्रामाणिक मानवीय संवेदना यही उनकी कहानियों और उपन्यासों की प्रेरणा बनी जिससे नारीवाद चेतन के प्रति उनकी गहन गंभीर अटूट आस्था के दर्शन होते हैं अतः यह कहना उचित होगा कि उनकी सिर्फ का खाली भावुकता नहीं है,उनका सच्चा अनुभव कहानियों के रूप में व्यक्त हुई ।'समीक्षा 'में स्त्री केंद्रित कहानी ;'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' में इस तथ्य को उजागर करते हुए, प्रेम शशांक लिखते हैं- "इन कहानियों के चित्र कहानीकार के काफी निजी अनुभव जुड़े हुए हैं। 12

1.12 समीक्षक व्यक्तित्व:

डॉ श्यामा शर्मा का समीक्षक एवं परीक्षक व्यक्तित्व भी खुलता हुआ दिखाई दे रहा है। उन्होंने शैलेंद्र सागर ,रजनी गुप्ता द्वारा संपादित पुस्तक 'आजाद औरत कितनी

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

आजाद 'का परीक्षण "स्त्री विमर्श से गायब क्यों है ग्रामीण स्त्री"?13 शीर्षक के अंतर्गत किया है। रीता भदोरिया द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'पानी पर गांठ 'का परीक्षण 'भरोसा जागती कविताएं '14शीर्षक के अंतर्गत किया है। यह एक करवा चौथ व्रत पर एक टीका टिप्पणी है। देवेंद्र मेवाड़ी द्वारा लिखित 'मेरी यादों का पहाड़' पुस्तक की समीक्षात्मक टिप्पणी 'कानों में बजती है धन- मन , धन-मन 15 शीर्षक के अंतर्गत की है।

इसी प्रकार डॉक्टर शमा शर्मा के कादंबिनी अगस्त 2012 में 'दूसरे को आजादी देने से तय होगी अपनी आजादी', कादंबिनी जुलाई 2007 में 'हरियाली और खूबसूरती का नाम है श्रीलंका ', कादंबिनी अक्टूबर 2003 में 'औरतों को देवी मत बनाइए', कादंबिनी फरवरी 2014 'हिग्स बोसोन'और बसंती' शीर्षक से लेख लिखकर अपने सृजन के बहुआयामी व्यक्तित्व का परिचय दिया है।

1.14 पुरस्कार एवं सम्मान:

अधिकतर स्त्री के बारे में लिखने वाली लेखिका क्षमा शर्मा एक प्रसिद्ध कथाकार एवं पत्रकार है जो हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अपना ही प्रतिष्ठित और सुनिश्चित स्थान बनाया है। उन्हें उनके अनेक साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सरकारी, अर्द्ध सरकारी और निजी संस्थाओं द्वारा पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है जो इस प्रकार है-

(1) हिंदी अकैडमी दिल्ली द्वारा दो बार पुरस्कृत की जा चुकी है, जिसमें से एक बार उनका उपन्यास 'दूसरा पाठ' के लिए सम्मानित किया गया है।

(2) बाल कल्याण संस्थान कानपुर द्वारा 'बाल साहित्य पुरस्कार 1997-98 से सम्मानित किया गया है।

(3) इंडो -रूसी क्लब, दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया है।

(4) सोनिया गांधी ट्रस्ट दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया है।

1.15 कृतियों के विविध कोण:

(1) डॉ श्यामा शर्मा की महिला संगठनों और पत्रकारों की यूनियन में सक्रिय भागीदारी रही है।

(2) डॉक्टर क्षमाजी लेखिका संघ की आजीवन मानद सदस्य है

(3) डॉक्टर क्षमाजी दो बार इंडियन प्रेस कोर की प्रबंध समिति के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रमुख रही है।

(4) डॉक्टर क्षमाजी दूरदर्शन के राष्ट्रीय पुरस्कार की जूरी में (2001-2002) में महत्वपूर्ण कार्य कर चुकी है। डॉक्टर क्षमा जी 31 वर्ष से हिंदुस्तान टाइम्स की बाल पत्रिका 'नंदन 'से संबंध है । वर्तमान में 'नंदन' की कार्यकारी संपादक है।

(5) भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने उन्हें 28 जून 2000 को उनकी पुस्तक 'स्त्री का समय 'के लिए 'भरतेंदूहरिश्चंद्र पुरस्कार' के अंतर्गत 'प्रथम लेखिका पुरस्कार से पुरस्कृत किया है।

2 कृतित्व:

2.1 प्रस्तावना:

डॉक्टर क्षमा शर्मा नारी विमर्श की बहुत चर्चित लेखिका है। हिंदी कथा साहित्य की बहुमुखी, बहुआयामी कथाकार के रूप में प्रख्यात है। क्षमा जी पिछले दो-तीन दशकों से अनवरत लेखन कार्य द्वारा मौलिक साहित्य सृजन करती आ रही है । उनका कथा साहित्य विविधता से पूर्ण रहा है। उनके लेखन का दायरा बहुत विस्तृत रहा है। इसमें उन्होंने समाज के हर पहलू को उजागर किया है। इनके कथा साहित्य के केंद्र में नारी है, समाज में नारी की बदलती स्थिति को अपनी कथा साहित्य में रेखांकित किया है ।

इस संदर्भ में 'समीक्षा 'में स्त्री केंद्रित कहानी 'रास्ता छोड़ो डार्लिंग' में प्रेम शशांक का वक्तव्य उल्लेखनीय रहा है। जैसे- नए-नए चरित्रों में लाना, रचनात्मक की असली निशानी है । लेकिन स्त्री केंद्रित कहानियां अंत तक चकित करता है। कई अर्थों में यह कहानीकार की सीमा की ओर भी संकेत करता है। 16 इस से ज्ञात होता है कि क्षमा शर्मा की स्त्री केंद्रित कहानियों की संख्या अत्यधिक रही है ।

2.1.1 कहानी संग्रह:

काला कानून- कहानी संकलन 1982 में देवदार प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें 18 कहानियां संकलित है। इस पुस्तक में शामिल कहानियां क्षमा जी की आरंभिक कहानियां रही है। क्षमाजी कहती है," जैसा बच्चा ककहरा "सीखता है और उसे बार-बार लिखना चाहता है, टेढ़े -मेढ़े अक्षर भी उनके लिए अपार संतोषकारक होते हैं यह कहानियां भी उसी का करें ककहरे की तरह मुझे लगती है ।17

काला कानून कहानी संग्रह में क्षमाजी ने स्त्री की विभिन्न स्थितियों में होने वाले उत्पीड़न, आक्रोश, छटपटाहट को बहुत ही अच्छी तरह से समाज के सामने रखकर सोचने के लिए विवश किया है।

2.1.2 कस्बे की लड़की:

यह कहानी-संकलन राजधानी प्रकाशन द्वारा 1989 में प्रकाशित किया गया । इस कहानी संकलन में कुल 14 कहानियां संकलित की गई है। यह कहानियां समय-समय पर साप्ताहिक हिंदुस्तान, सारिका, साक्षात्कार, अमर उजाला, आज, जागरण आदि में प्रकाशित हुई है। इनमें से कुछ कहानियां पंजाबी एवं गुजराती में अनुदित हुई है। क्षमा जी ने इस दूसरे कथा संग्रह की कहानियों में कस्बे की स्त्रियों की तनाव ग्रस्त अवस्था, उनके संघर्ष को चित्रित किया है ।

2.1.3 घर-घर तथा अन्य कहानियां:

डॉक्टर क्षमा शर्मा द्वारा लिखित यह कहानी संग्रह 1993 में सचिन प्रकाशन नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें कुल 16 कहानियां संग्रहित की गई है। इस कहानी संग्रह की कहानियों में नारी चिंतन स्पष्टता दृष्टिगोचर होता दिखाई देता है। कहानियां नारी के विविध रूपों का चित्रांकन करती है।

2.1.4 थैंक्यू सद्दाम हुसैन:

डॉक्टर क्षमा शर्मा का यह कहानी संकलन भारतीय प्रकाशन संस्था द्वारा 1997 में प्रकाशित किया गया है। इसमें 14कहानियां संकलित की गई है । यह कहानियां स्त्री की बदलती तस्वीर को समाज के सामने रख रही है। क्षमा जी का मानना है कि स्त्रियां अपनी भूमिका बदल रही है।

2.1.5 लव स्टोरीज:

लव स्टोरीज कहानी संग्रह 1998 में आत्माराम एंड संस द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसमें 48 कहानियां संकलित है। इस कहानी संग्रह में क्षमाजी ने स्त्री मुसीबतें जो जिंदगी भर खत्म नहीं होती, नारी का लगातार पीछा करती है, इसी परिवेश का अपूर्व चित्रण किया है।

2.1.6 21 वी सदी का लड़का:

डॉ क्षमाशर्मा के इस कहानी संकलन का प्रकाशन 1999 सामयिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ ।इसमें कुल 22 कहानियां संकलित है। इन कहानियों में उन स्त्रियों की कठिनाइयों को समाज के सामने लाने का प्रयास किया है जो किसी को दिखती ही नहीं।

2.1.7 रास्ता छोड़ो डार्लिंग:

इस कहानी संकलन का प्रकाशन 2008 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया। यह कुल 41 कहानियों का संकलन है। इस कहानी संग्रह में क्षमाजी ने ताकत और पैसे के बल पर टिके समाज की एक-एक प्रति खोली है।

2.1.8 नेम प्लेट:

डॉक्टर क्षमा जी इस कहानी संकलन का प्रकाशन राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है । इस कहानी संग्रह में कुल 28 कहानियां संकलित है। यह

कहानियां नारी के विविध आयाम एवं रूपों को उभारती है। इन कहानियों में नारी संबंधित जो विविध गलत सोच एवं धारणाएं बनी है, उन पुरानी एवं सड़े- गले नियमों के प्रति नारी मुंहतोड़ जवाब देती है।

2.1.9 लड़की जो दिखती पलट कर:

यह कहानी संकलन वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है । इस संकलन में कुल 30 कहानियां संकलित की गई है। इन कहानियों से क्षमाजी की यथार्थ की समझ और उस पर भरोसा का आत्मविश्वास स्पष्ट दिखाई देता है।

2.2 उपन्यास:

2.2.1 दूसरा पाठ:

यह उपन्यास विकास पेपर बॉक्स द्वारा प्रकाशित किया गया है 1994 में। इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने शिक्षा प्रणाली से संबंधित कार्य पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। आज की विकृत हुई शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन की अत्यंत आवश्यकता है। समाज ने शैक्षिक वातावरण में फैली अव्यवस्था के प्रति सुधार की आवश्यकता की ओर संकेत किया है। जब तक सुधार नहीं तब तक स्थिति में कोई परिवर्तन की गुंजाइश भी नहीं है।

2.2.2 परछाई अन्नपूर्णा:

डॉ शर्मा शर्मा का यह उपन्यास राज्य सूर्य प्रकाशन द्वारा1996 में प्रकाशित किया गया है। परछाई अन्नपूर्णा की नायिका नौकरी करने वाली स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है। नारी शिक्षित होकर स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर रहकर अपनी मानसिकता में भी परिवर्तन ला रही है।

2.2.3 शस्य का पता:

डॉ शर्मा जी द्वारा लिखित यह उपन्यास 1997 में आकाशदीप पब्लिकेशन द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस उपन्यास में क्षमा जी ने पर्यावरण से संबंधित प्रदूषण का सवाल उठाया है। प्राकृतिक प्रदूषण के साथ-साथ सामाजिक प्रदूषण एवं मनोवैज्ञानिक प्रदूषण भी आपके कथा साहित्य में अभिव्यक्त होता है।

2.2.4 मोबाइल:

यह उपन्यास राजकमल प्रकाशन द्वारा 2004 में प्रकाशित किया गया है । इस उपन्यास के माध्यम से क्षमा जी ने महानगरों में जीवन की दिशा तलाश थी लड़कियों की चुनौतियों को वाणी प्रदान की है ।

Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

2.3 स्त्री विषयक लेखों का संग्रह:

2.3.1 स्त्री का समय:

यह लेख स्त्री विषयक संग्रह है जो 1998 में मेधा बुक्स दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया है इसमें कुल 28 लेख संकलित किए गए हैं जो साप्ताहिक हिंदुस्तान, दैनिक हिंदुस्तान, विदुर, कुरुक्षेत्र, समाज कल्याण, सारिका आदि देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में छपे है ।

2.3.2 स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य:

डॉक्टर क्षमा शर्मा ने स्त्री विमर्श से संबंधित पुस्तक का प्रकाशन 2002 में राजकमल प्रकाशन द्वारा किया है, इसमें कुल 30 लेखों को संकलित किया गया है ।

2.3.3 औरतें और आवाजे:

डॉक्टर क्षमा शर्मा का यह लेखों का संग्रह आलेख प्रकाशन द्वारा 2005 में प्रकाशित किया गया। इसमें कुल 37 लेखों को संग्रहित किया गया है, जो जीवंत लेखों का संग्रह है ।

2.3.4 बाजार ने पहनाया बाबी को बुर्का:

यह स्त्री विषयक लेखो की पुस्तक 2008 में पेंगुइन बुक्स द्वारा प्रकाशित की गई है। इसमें कुल 27 लेखों को संकलित किया गया है।

2.3.6 बाल साहित्य:

डॉक्टर क्षमा शर्मा बालकों को बहुत प्यार करती थी। उसका बाल साहित्य बच्चों के लिए मनोरंजन के साथ शिक्षा का बहुत बड़ा खजाना रहा है । क्षमाजी समय-समय पर बच्चों के लिए छोटी-छोटी पुस्तकों को प्रकाशित करवाती रही है।

2.3.7 बंद गलियों के विरुद्ध:

डॉक्टर क्षमा शर्मा तथा मृणाल पांडे द्वारा संपादित इस पुस्तक का प्रकाशन 2001 में राजकमल प्रकाशन द्वारा किया गया है । इस पुस्तक में उन्होंने महिला पत्रकारों तथा लेखिकाओं द्वारा लिखे गए लेखों को एक साथ पुस्तक ग्रुप में समाज के सामने रखा है ।

3 निष्कर्ष:

डॉ क्षमाशर्मा एक महान साहित्यकार थी उनकी साहित्यिक कृतियों में नारी केंद्र में रही है, । उन्होंने नारी जीवन को गंभीर एवं गहनता से उजागर कर अपनी अनुभूति पूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान की है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Volume 9, Issue 2, (April-June 2021)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

संदर्भ

1: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-9
2: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-10
3: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-13
4: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-15
5: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-16
6: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-16
7: कादंबिनी, फरवरी -2014, पृष्ठ-23
8: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-39
9: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-38
10: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-23
11: स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य: पृष्ठ-27
12: समीक्षा, जनवरी-मार्च 2019 अंक-4, वर्ष -41, पृष्ठ- 39
13: कादंबिनी, जनवरी- 2010, पृष्ठ -56-57
14: कादंबिनी, मई -2012, पृष्ठ -68
15: कादंबिनी, नवंबर -2012, पृष्ठ -60
16: समीक्षा, जनवरी-फरवरी 2009, अंक- 4, पृष्ठ -35
17: काला कानून, दो शब्द, क्षमा शर्मा, पृष्ठ -5

क्रम सं	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशन	साल
1	नारी विमर्श एवं समाज शर्मा का कथा साहित्य	डॉक्टर लता गुजराती	विद्या प्रकाशन	2018
2	स्त्रीत्ववादी विमर्श: समाज और साहित्य	क्षमा शर्मा	राजकमल प्रकाशन	2002
3	बाल विकास और संबंधित क्षेत्र	मीना गानोरकर	राजकमल प्रकाशन	2000
4	समीक्षा	क्षमा शर्मा	दैनिक	2009

			जागरण	
5	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	जुलाई 2007
6	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	फरवरी 2014
7	काला कानून	क्षमा शर्मा	देवदार प्रकाशन	1982
8	कादंबिनी	क्षमा शर्मा	दैनिक जागरण	अप्रैल 2007